बकरी पालन: किसान की आजिविका का प्रमुख साधन

डॉ अंशुमान गुप्ता [1], डॉ. सर्वेश त्रिपाठी [2], रंजीत सिंह राघव [3], सुनील कैथवास[4]

डॉ अंशुमान गुप्ता, कार्यक्रम सहायक (पशुपालन)

कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन, मध्य प्रदेश

संपर्कः फोनः 09826047644

ई मेलः anshu753936@gmail.com

बकरी पालन सभी जलवायु में साधारण आवास, सामान्य रखरखाव, कम लागत तथा पालन पोषण में सम्भव है। इस कारण आजिविका उन्नयन में बकरी पालन विशेष है। बकरी जिसे गरीब की गाय भी कहा गया है, जबकि दाना, चारा एवं इलाज महंगा हो गया है और पशुपालन दूभर हो गया है वहीं बकरी पालन कम लागत एवं सामान्य देख रेख में गरीब किसान एवं खेतिहर मजदूरों की आजिविका का प्रमुख साधन बना हुआ है।

बकरी पालन का कार्य मुख्यतः मांस एवं दुग्ध के लिये किया जाता है साथ ही कुछ क्षेत्रों में ऊन के लिये भी किया जाता है, इसके अतिरिक्त इसके मूत्र व मल में नाईट्रोजन की अधिकता के कारण ये उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं। यह जंगली घास, पेड़, व पत्तों को खाकर पौष्टिक पदार्थ जैसे मांस व दूध में परिवर्तित करती है, भारत वर्ष में लगभग 20 प्रजातियां उपलब्ध हैं।

भारत सरकार एवं कृषि पशुपालन विभाग द्वारा भारत की विभिन्न नस्लों जैसे बारबरी, सिरोही, ब्लेक बंगाल, गंजम आदि के संरक्षण एवं विकास से संबंधित योजनाऐं चलाई जा रही हैं।

देश में उपलब्ध प्रमुख नस्लें-

जमुनापारीः- यह सबसे लम्बी व ऊंची नस्ल है ये उत्तर प्रदेश के इटावा एवं गंगा यमुना तथा मध्य प्रदेश के चंबल क्षेत्र में पाई जाती है। शरीर पर सफेद व लाल लंबे बाल पाये जाते हैं। नर के व्यस्क होने पर औसतन 70-90 किग्रा. वजन एवं मादा के व्यस्क होने पर 50-60 किग्रा. वजन होता है। अपने क्षेत्रों में 1.5-2.0 किग्रा. दूध प्रतिदिन प्राप्त होता है।

बीटलः- यह पंजाब में पाई जाती है व्यस्क नर का वजन 55-65 किग्रा. होता है मादा का वजन 45-55 किग्रा. होता है । बीटल सभी जलवायु में उपयुक्त नस्ल मानी गई है।

सिरोहीः- यह नस्ल प्रमुखता से राजस्थान के सिरोही क्षेत्रों में पाई जाती है, इस नस्ल का उपयोग दुग्ध उत्पादन के लिये किया जाता रहा है।

बारबरीः- यह उत्तर प्रदेश के मथुरा, आगरा क्षेत्रों में उपलब्ध है यह छोटे कद की गठीले शरीर की होती है मादा का वजन 25-30 किग्रा. होता है, यह गाय की तरह बांधकर रखी जा सकती है। बकरियाँ औसतन 1.0 लीटर दूध प्रतिदिन देती हैं।

ब्लैक बंगाल- यह नस्ल पश्चिम बंगाल, झारखंड, उड़ीसा में पाई जाती है। शरीर काला भूरा तथा सफेद रंग के छोटे रोंए होते हैं, यह छोटे कद की होती है नर का वजन 18.50 किग्रा. एवं मादा का वजन लगभग 15.50 किग्रा. होता है। औसतन 2 वर्ष में 3 बार बच्चा देती हैं, प्रजनन क्षमता अच्छी होने के कारण इसकी वृद्धि दर अन्य की तुलना में अधिक है, इसका मांस स्वादिष्ट होता है।

विदेशी नस्ल की प्रमुख नस्लें-

अलपाईन- यह स्वीटजरलेंड की नस्ल है, दूध उत्पादन में उपयुक्त है अपने गृह क्षेत्र में यह 3-4 लीटर दूध देती है।

सानेन- यह भी स्वीटजरलैंड में पाई जाती है यह भी अपने गृह क्षेत्रों में 3-4 लीटर दूध देती है।

गर्भवती बकरी की देखभाल-

गर्भवती बकरियों को गर्भावस्था के अंतिम डेढ़ महिने में अधिक सुपाच्य एवं पौष्टिक भोजन की आवश्यकता होती है। इस समय गर्भवती बकरी के पोषण एवं रख-रखाव पर ध्यान देने से स्वस्थ्य बच्चा पैदा होगा एवं बकरी अधिक मात्रा में दूध देगी तथा इनके बच्चों में शारीरिक विकास भी अच्छा होगा। बकरियों में गर्भावस्था औसतन 142-148 दिनों का होता है। बच्चा देने के 2-3 दिन पहले से बकरी को साफ सुथरे स्थान पर अन्य बकरियों से अलग पुआल पर रखें आवास व्यवस्था वातावरण के अनुसार करनी चाहिए। प्रत्येक 10 बकरियों के परिवार के लिए 100-120 वर्ग फीट यानि 10X12 जमीन की आवश्यकता होगी। बकरा बकरी को अलग-अलग रखना चाहिए।

घर हवादार एवं साफ सुथरा रहना चाहिए। घर का सतह (जमीन) ढालुआं होनी चाहिए ताकि सफाई आसान हो। बकरियाँ खासकर बच्चों को ठंड से बचाने का प्रबंध आवास में होना जरूरी है।

बकरियों का पोषण-

बकरियाँ चरने के अतिरिक्त हरे पेड़ की पत्तियाँ, हरी घास, दाल चुन्नी, चोकर आदि पसन्द करती हैं। बकरियों को रोज 6-8 घंटा चराना जरूरी है। यदि बकरी को घर में बांध कर रखना पड़े तब इसे कम से कम दो बार भोजन दें। बकरी हर चारा (लूसर्न, बरसीम, जई, मकई, नेपियर आदि) और

पत्ता (बबूल, बेर, बकाइन, पीपल, बरगद, गूलर, कटहल आदि) भी खाती है। एक वयस्क बकरी को औसतन एक किलो ग्राम घास या पत्ता तथा 100-300 ग्राम दाना का मिश्रण (मकई दरों, चोकर, खली, नमक मिलाकर) दिया जा सकता है। बच्चों को 50-100 ग्राम, वयस्क को 100-150 ग्राम, गर्भवती बकरी को 200 ग्राम तथा दूध देने वाली बकरी को 300 ग्राम दाना का मिश्रण देना चाहिए।

मांस उत्पादन हेतु बकरी पालनः-

बाजार में मांस की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। जिसके कारण बकरियों की मूल्यों में भी काफी वृद्धि हूई है। ब्लैक बंगाल, मांस उत्पादन हेतु उपयुक्त है। इसका प्रजनन बीटल या सिरोही नस्ल के बकरों से कराकर अधिक लाभ ले सकते हैं क्योंकि इससे उत्पन्न नर बच्चे छः माह की उम्र में औसतन 14-15 किग्रा वजन प्राप्त कर लेता है।

प्रजनन व्यवस्थाः-

बकरी के 10 महिने की उम्र पर ही प्रथम प्रजनन करावें। प्रजनन का चक्र इस प्रकार हो कि दो वर्ष में तीन बार बकरी बच्चा दे। बकरी 18-21 दिन के अन्तराल पर गर्म अवस्था में आती है। और इस अवस्था में 24-72 घंटों तक रहती है। गर्म अवस्था में 10-12 एवं 24-26 घंटों के बीच दो बार पाल दिखाना चाहिए।

बिमारियों से रोकथामः-

प्रजनन से पूर्व बकरी को कृमि नाशक दवा अवश्य देनी चाहिए। बच्चों को एक माह की उम्र से पहली बार कृमि नाशक देना चाहिए। और फिर प्रत्येक दो महिने पर देना चाहिए। गर्भवती बकरी को बच्चा देने के 2-3 सप्ताह पहले कृमि नाशक देना चाहिए।

गर्भधारण के बाद के दो महीने तक कृमि नाशक नही देना चाहिए। बच्चों को 8 सप्ताह की उम्र में पहली बार इन्टेरोटोक्सिमिया और टिटनस का टीका लगाना चाहिए। बकरी को गर्भधारण के 4-6 सप्ताह बाद इन्टेरोक्सिमिया और टिटनस का टीका लगाना चाहिए। वयस्क बकरे को ये टीके वर्ष में एक बार अवश्य लगाना चाहिए।

लेखक विवरण

1. डॉ. अंशुमान गुप्ता, कार्यक्रम सहायक (पशुपालन), कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन, मध्य प्रदेश
2. डॉ. सर्वेश त्रिपाठी, वैज्ञानिक (कृषि प्रसार), कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन, मध्य प्रदेश
3. श्री रंजीत सिंह राघव, वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन, मध्य प्रदेश
4. श्री सुनील कैथवास, प्रक्षेत्र प्रवन्धक, कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन